अहंकार से सहानुभूति की ओर

> सम्मान, सहानुभूति और समझ ही आधुनिक संबंधों की नींव हैं ।

> वह जहां अहंकार दूरियों को बढ़ाता हैं, वहीं एक - दूसरे की भावनाओं को समझना रिश्तों को गहराई देता हैं । ज्ञान में अहंकार उसी प्रकार मिश्रित होता है जिस प्रकार दूध में पानी, वास्तविक ज्ञानी हंस के

समान होता है । वह जो ज्ञान तो प्राप्त करता है किन्तु उसके साथ मिश्रित अहंकार त्याग देता है । अतः हमारा अहंकार रहित ज्ञान ही आत्म-ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग हैं जिस पर व्यक्ति चलता हुआ ईश्वर साक्षात्कार के लक्ष्य तक पहुंचता है। ज्ञान से जीवन का पथ आलोकित बनता है।

> ज्ञान का सूरज हर कदम पर साथ चलता है। पर अहंकार का राहू जब डस लेता है सूरज को तो भरी दुपहरी मे भी सबकुछ धुंधला लगता है। जीवित रहने के लिए जिस प्रकार हमको हवा व भोजन आवश्यक हैं। उसी प्रकार जीवन में रिश्ते भी जरूरी हैं। हमारे भौतिक सुख सुविधा चाहे कितनी भी हों यदि साथ में परिवार, मित्र, सहकर्मी आदि- आदि न हों तो ऐसा लगता है जैसे कुछ नहीं हैं। कहते भी हैं जीवन की बड़ी कीमती पूंजी हमारे रिश्ते हैं। वह चाहे हों स्व परिवार के या हों मित्र-यार के , चाहे वरिष्ठ-कनिष्ठ सहकर्मियों के हों, या हों समान धर्मानुयायियों के आदि - आदि । किसी से भी रिश्ते हों । हमारे जीवन को संतुलन और खुशी रिश्ते प्रदान करते हैं। रिश्ते प्रेम से अंकुरित होते हैं। वह संवाद से जिंदा रहते हैं, संवेदनाओं से महसूस होते हैं। रिश्तें दिल से जिएं जाते हैं , गलतफहमियों से मुरझा जाते हैं, अहंकार से बिखर जाते हैं आदि - आदि । इसलिए आपसी तालमेल , सूझबूझ व प्रेम आदि से रिश्तों को बनाए रखें । जीवन में शांत, प्रसन्न व तनाव मुक्त रहें । हम यह याद रखें कि रिश्तों की मिठास ही जीवन में माधुर्य का आभास देती है। इसलिए मधुर रिश्ते जीवन के खास हिस्से हैं । रिश्तों के कई धागे हैं जिन्हे जोड़कर हम हर रिश्ते की माला को और सुंदर बना सकतें हैं । रिश्तों का सौन्दर्य परफ़ेक्ट होने में नहीं हैं , बल्कि संवदेनशील होने में हैं । मानवीय गुणों में करुणा एक विशिष्ट गुण है। यह अपने आप में परोपकार, सहानुभूति समेटे हुए है । संवेदना व दयालुता जैसे मानवता के अभीष्ट गुण हैं । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि करुणा जीवन को महानता की ओर ले जाती है । वह मन को आनंद विभोर कर देती है । यह केवल दया-भाव नहीं है । यह मनुष्य होने का एक दुर्लभ स्वभाव परिलक्षित करता है । वह जब मन करुणा से सरोबार हो जाता हैं तो करुणा पात्र का कष्ट अपना सा ही आकार ले लेता हैं । इसीलिए करुणा मात्र दया नहीं हैं । यह दया करने का भाव शक्तिशाली चरित्र का हार्दिक स्वभाव है । इसीलिए तो पर दुःख से हर महान कार्य कोई दूजा नहीं हो सकता क्योंकि इसमें पीड़ित का कष्ट अपना सा लगने लगता है । वह जब हम हर कठिन परिस्थिति को टूटने का नहीं , बदलने का अवसर मानते है , तभी रिश्ते स्नेह सूत्र में बदलते हैं । एक ऐसी माला में , जिसे पहनकर हर इंसान खुद को सुरक्षित, सम्मानित और प्रेमपूर्ण महसूस करता हैं । जीवन की बगिया को यदि विकसित करना है तो उसे माली की तरह इन खाद-पानी से सिंचित करते रहें । वह जैसे स्वस्थ तन-मन के लिए नित प्रातः भ्रमण हो, आसन-प्राणायाम व व्यायाम तथा योगासन का आयाम हो , सहानुभूति व मिलनसारिता का व्यवहार सुविचार हमारे सदा हो, शान्त शुद्ध आचार, आशाओं का भण्डार मन में सदा हो , उत्तम सोच , मृदुभाषिता आदि कभी विलासिता छू न जाए , आत्मविश्वास भरपूर हो , मन कभी सेवाभाव से दूर न हो आदि-आदि । वह सभी की मात्रा यथोचित प्रचुर हो। वह इससे जिन्दगी फलती फूलती रहेगी, सदा प्रसन्नता व प्यार मोहब्बत की कहानी कहेगी। पुराने रिश्ते संघर्ष- रहित इसलिए थे क्योंकि वे एकतरफा थे । आज के रिश्ते संघर्षपूर्ण नहीं , बल्कि जीवन की दो अलग पहचानें एक नए संतुलन की तलाश में हैं । जहां पहले एक का अस्तित्व होता था , आज दोनों के अस्तित्व हैं और यही आधुनिक संबंधों की सुंदरता हैं । संत कबीर का दोहा बिल्कुल सटीक बैठता हैं कि - जब मैं था तब हरि नाहिं , अब हरि हैं मैं नाहिं , प्रेम गली अति सांकरी , जामें दो न समाहिं । यानि ऋहृता और स्नेह-प्रीत का साथ प्यारा , अहम् और नफरत उन्हें गवारा नहीं हैं । अहम् के साथ ज्ञान कहां टिकता , सरलता से ही सबने आज तक स्नेहादर जीता हैं । जहां गुरूर का अज्ञान हैं वहां ज्ञान कहां रहता हैं अहम् का पूर्ण विसर्जन हो , सहजता से सर्वस्व अर्पण हो , हम बिल्कुल स्वच्छ , स्फटिक दर्पण बनें । वह हमारे मन में मै आ जाए , मै के आगे कोई और नहीं! तब सब पर विराम लग जाता हैं । अहं से कुए के मेंढक सा हाल होता हैं । हमारा ज्ञान समिति हो जाता हैं । ज्ञान अथाह होता हैं जिसका कोई पार नहीं है। ज्ञान का सही मायने में जो पान करता हैं वह कभी अभिमान नहीं करता हैं । ज्ञान तो असीम है वो अभी कम पाया है । हर पल हर कण में ज्ञान भरा है। एक जन्म क्या अनंत जन्म सम्पूर्ण ज्ञान पाने में हमको लग जाएंगे । ज्ञान उसी में ठहरता हैं जो ऋहृ ,सरल , विनम्र , अनुशासित , नियमित और श्रमशील आदि होता हैं । ज्ञान का आचार सार है । पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय। अभी वर्तमान समय में स्नेह का सूत्र समर्पण नहीं से नहीं, सहयोग, संवेदना और संवाद से बुना जाता हैं ।

> प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)

सुविचारः आपका हर दिन शुभ हो

जब दूसरे हम में कलंक
ढूँढने में व्यस्त हो जाएँ तो
समझ लेना, हमारी चमक
उनसे सहन नहीं हो रही है।
आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो।
जय जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

(गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)
श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान।

(आस्था, आभूषण और आधुनिक अविश्वास की एक झांकी)

यह सुन्दर रामचरितमानस आपने कहाँ पाया

सोने की चमक और कलयुग की कसौटी ~ तुलसीदास जी ने जब रामचरितमानस की रचना की होगी, तब उनके पास न तो चौबीस कैरेट का शुद्ध सोना था, न ही किसी बड़े कॉर्पोरेट घराने या पूर्व नौकरशाह का संरक्षण। उनके पास था तो केवल एक निश्छल मन, अवधी का माधुर्य और प्रभु श्री राम के प्रति अनन्य भक्ति। उन्होंने इसे कागज़ और स्याही से दिल के पन्नों पर लिखा था। लेकिन, बदलते समय के साथ भक्ति का पैमाना भी 'मेट्रिक सिस्टम' और 'कैरेट' में तब्दील हो चुका है।

आज के युग में भक्ति तब तक मुकम्मल नहीं मानी जाती, जब तक उसमें करोड़ों का निवेश और धातुओं का वजन न जुड़ा हो। हाल ही में अयोध्या के भव्य श्री राम मंदिर में एक ऐसी ही घटना घटी, जिसने न केवल आध्यात्मिक जगत को चमत्कृत किया, बल्कि इंसानी फितरत, प्रशासनिक व्यवस्था और कलयुगी आशंकाओं पर एक करारा व्यंग्यबाण भी छोड़ दिया।

1. वैभव का विराट रूप : जब ग्रंथ बना आभूषण

मामला बेहद दिलचस्प है। पूर्व केंद्रीय गृह सचिव और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी एस. लक्ष्मीनारायण के परिवार ने 8 अप्रैल 2024 को श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को एक अत्यन्त भव्य, स्वर्णजड़ित श्रीरामचरितमानस दान की। इस ग्रंथ की भौतिक भव्यता को समझने के लिए इसके तकनीकी और आर्थिक आंकड़ों पर दृष्टि डालना आवश्यक है ~ कुल अनुमानित लागत ~ लगभग 5 करोड़ रुपये। कुल वजन ~ 147 किलोग्राम। धातुओं का दिव्य मिश्रण ~ शुद्ध 24 कैरेट सोना ~ 700 ग्राम। चाँदी ~ 2.8 किलोग्राम। ताँबा ~ 143.5 किलोग्राम। पृष्ठों की संख्या ~ 522 पृष्ठ (प्रत्येक पन्ने की मोटाई 1 मिलीमीटर)। कुल छंद और श्लोक ~ गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित सभी 10,902 छंद और श्लोक। निर्माता ~ चेन्नई की सुप्रसिद्ध ज्वैलरी फर्म वुमदी बंगारू वेलर्स (जिन्होंने भारत के नए संसद भवन का ऐतिहासिक सेंगोल भी बनाया है)। निर्माण अवधि~ लगभग 6 महीने का अनवरत परिश्रम। चेन्नई के कुशल कारीगरों ने छह महीने तक पसीना बहाकर, ताँबे, चाँदी और सोने के अद्भुत सम्मिश्रण से एक ऐसा कालजयी ग्रंथ तैयार किया जो सदियों तक सुरक्षित रह सके। हर पन्ने पर उकेरे गए अक्षरों में श्रद्धा की चमक थी। दानदाता का भाव पवित्र था - वे अपनी जीवनभर की कमाई का एक बड़ा हिस्सा प्रभु के श्रीचरणों में अर्पित कर रहे थे।

2. गरुड़ का प्रश्न और कलयुगी आशंकाएं :

यह सुन्दर रामचरितमानस आपने कहाँ पाया

श्रीरामचरितमानस के उत्तरकाण्ड (94/2) में यह पौराणिक और अत्यन्त मार्मिक प्रसंग आता है। जब पक्षीराज गरुड़ जी के मन में श्री राम के चरित्र को लेकर कुछ संशय उत्पन्न होते हैं, तब वे ज्ञान के सागर, श्रीरामभक्त शिरोमणि काकभुशुण्डि जी के पास जाते हैं। काकभुशुण्डि जी उन्हें रामकथा सुनाते हैं। कथा सुनकर गरुड़ जी भाव-विभोर हो जाते हैं और कृतज्ञता व विस्मय से भरकर पूछते हैं - ÷हे तात! यह परम सुन्दर और पावन रामचरितमानस आपने कहाँ पाया÷ त्रेतायुग और द्वापर के संधिकाल में पूछा गया यह प्रश्न पूर्णतः आध्यात्मिक था, जिसका उत्तर ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के सन्दर्भ में था। लेकिन कलयुग में इसी प्रश्न का अनुवाद पूरी तरह से भौतिक और प्रशासनिक हो गया।

जब दान के कुछ समय बाद वह 147 किलोग्राम का स्वर्ण ग्रंथ मंदिर के गर्भगृह या प्रदर्शन पटल से अचानक ओझल हो गया, तो दानदाता पूर्व आईएएस अधिकारी के मन में एक नया प्रश्न कौंधा। उन्होंने शिकायत दर्ज कराई कि ग्रंथ को कुछ समय तक प्रदर्शित करने के बाद हटा दिया गया है। हद तो तब हो गई जब उन्हें इस पाँच करोड़ी दान की कोई आधिकारिक रसीद तक नहीं मिली। एक पूर्व गृह सचिव, जो देश की आन्तरिक सुरक्षा और फाइलों के रखरखाव का उस्ताद रहा हो, वह बिना रसीद और बिना भौतिक सत्यापन के कैसे शान्त बैठ सकता था उनके मन में आशंका उठी कि कहीं यह भव्य ग्रंथ गायब तो नहीं हो गया सोशल मीडिया पर यह खबर आग की तरह फैली और देखते ही देखते हड़कम्प मच गया। डिजिटल युग के गरुड़ (नेटीजन्स) ट्वीट कर-करके पूछने लगे - प्रभु! यह सुंदर रामचरितमानस आपने कहाँ छुपाया

3. ट्रस्ट की सफाई, न्यायोचित रखरखाव या रहस्य का पर्दा :

आरोपों की बौछार और जनता के कौतूहल को देखते हुए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को सामने आना पड़ा। उन्होंने स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा कि ग्रंथ कहीं गायब नहीं हुआ है। वह पूरी तरह सुरक्षित है। इसे सुरक्षा कारणों और न्योचित रखरखाव (Justified Maintenance) के लिए मन्दिर के एक अति-सुरक्षित भण्डार कक्ष (स्ट्रॉन्ग रूम) में रखा गया है। अब यहीं से व्यंग्य की तीखी धार शुरू होती है। जिस ग्रंथ को इसलिए बनाया गया था कि भक्त उसके दर्शन कर सकें, जिसकी आभा से श्रद्धालुओं की आँखें तृप्त हो सकें, उसे सुरक्षा के नाम पर तहखानों के अँधेरे में कैद कर दिया गया। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति एक बेहद खूबसूरत और कीमती पोशाक खरीदे, लेकिन इस डर से उसे कभी न पहने कि कहीं उस पर धूल न लग जाए या वह चोरी न हो जाए और उसे तिजोरी में बन्द रखे।

4. घोट-घोट मौसेरे भाई और दाल न गलने का अध्यालन :

लोकोक्ति है - चोर-चोर मौसेरे भाई। जब व्यवस्था में पारदर्शिता की कमी होती है, तो जनता के मन में यह धारणा स्वाभाविक रूप से बलवती हो जाती है कि पर्दे के पीछे सब मिले हुए हैं। यदि ग्रंथ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित (शिफ्ट) किया गया, तो इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं हुई होगी, क्योंकि आधुनिक तंत्र में फाइलों और फंड्स को इधर से उधर करने का हुनर सबको आता है।

लेकिन, इस पूरे प्रकरण में सबसे सांत्वना देने वाली बात यह रही कि ग्रंथ 'जैसी की तैसी' है। अर्थात, वह जैसी सौंपी गई थी, सुरक्षित तिजोरी में वैसी ही विराजमान है। व्यंग्यकारों और आलोचकों ने कयास लगाए कि यदि यह ग्रंथ किसी चम्पत दल (गबन करने वाले गिरोह) के हाथ लग जाता, तो कारीगरों द्वारा की गई नक्काशी और टांकों का हुलिया ही बदल गया होता। सोने के वर्क खुरच लिए गए होते और चाँदी की परतें गायब हो चुकी होतीं। लेकिन यह बात तो सामान्य टांके लगाने या उखाड़ने की नहीं थी, यह तो 147 किलोग्राम की भारी-भरकम धातु को गलाने की थी। शायद कलयुग के शातिर चोरों और बिचौलियों का चम्पत दल अभिसंख्य तो था, उनके इरादे भी बुलन्द रहे होंगे, परन्तु इतनी भारी धातु को चुपचाप हजम कर जाना मुमकिन नहीं था। इसीलिए कहा जा सकता है कि इस बार उनकी दाल नहीं गली। 143.5 किलोग्राम ताँबे और 2.8 किलोग्राम चाँदी के कवच के बीच सुरक्षित 700 ग्राम शुद्ध सोना उनके लालच की आँच में पिघलने से बच गया।

5. प्रेरणा और शिक्षा : धातु बनाम आस्था :

इस पूरे घटनाक्रम से समाज, प्रशासन और धार्मिक संस्थाओं को बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। धार्मिक संस्थाओं के लिए ~ पारदर्शी और उत्तरदायित्व सर्वोपरि है। चाहे दान ऐक रुपये का हो या पाँच करोड़ का, उसकी रसीद और उसका हिसाब काँच की तरह साफ होना चाहिए, ताकि श्रद्धालुओं का विश्वास अक्षुण्ण रहे। भक्तों और दानदाताओं के लिए ~ भक्ति का प्रदर्शन यदि अत्यधिक भौतिक और कीमती होगा, तो वह श्रद्धा की वस्तु कम और %सुरक्षा का सिरदर्द% अधिक बन जाएगा। भगवान भाव के भूखे हैं, धातुओं के नहीं। प्रशासन के लिए ~ जनभवानाओं से जुड़े मामलों में सूचनाओं का आदान-प्रदान त्वरित होना चाहिए। यदि ट्रस्ट पहले ही स्पष्ट कर देता कि ग्रंथ कहाँ और क्यों रखा गया है, तो अफवाहों का बाजार गर्म न होता।

हृदय की मानस ही वास्तविक मानस है :

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है ~ रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेउ सो जाननिहारा।÷ अर्थात् भगवान को केवल प्रेम प्यारा है। पाँच करोड़ की यह स्वर्णजड़ित रामचरितमानस निश्चित रूप से शिल्प कला का एक उत्कृष्ट और बेजोड़ नमूना है। यह दानदाता के अद्भुत समर्पण को भी दर्शाता है, लेकिन जब यह कलाकृति तिजोरी में बन्द हो जाती है, तो यह सोचने पर विवश करती है कि क्या हम वास्तव में श्रीरामजी के आदर्शों को सहेज रहे हैं या केवल उनकी कथा के नाम पर सोने चाँदी का संचय कर रहे हैं। यह ग्रंथ भले ही भण्डार कक्ष में जैसी की तैसी सुरक्षित रखी हो, लेकिन असली रामचरितमानस तो वह है जो मानव के चरित्र में उतरती है। यदि हम समाज से कपट, लालच और अविश्वास के चम्पत दलों का खात्मा कर सकें, तभी रामराज्य की संकल्पना साकार होगी। जब तक जनता के मन में चोर-चोर मौसेरा भाई की शंका बनी रहेगी, तब तक सोने के पन्नों पर लिखे राम नाम की चमक भी फीकी ही रहेगी।

- डॉ. गौतमसिंह पटेल
सालर, जिला - सारंगढ़-बिलाईगढ़, छत्तीसगढ़ पिन - 496 445, मो. - 94242 26409

क्या फिर से लौट रहा कोरोना वायरस?

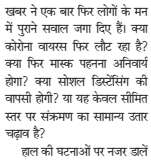

कोरोना महामारी ने दुनिया को जो अनुभव दिया, उसने स्वास्थ्य व्यवस्था से लेकर अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन तक सब कुछ बदल दिया। वर्षों तक चले लॉकडाउन, मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग और टीकाकरण अभियानों के बाद जब जीवन धीरे धीरे सामान्य होने लगा, तब अधिकांश लोगों ने यह मान लिया कि कोरोना अब इतिहास बन चुका है। लेकिन हाल के दिनों में देश के कुछ राज्यों से कोविड 19 के नए मामले सामने आने और आंध्र प्रदेश में संक्रमण से दो लोगों की मौत की खबर ने एक बार फिर लोगों के मन में पुराने सवाल जगा दिए हैं। क्या कोरोना वायरस फिर लौट रहा है? क्या फिर मास्क पहनना अनिवार्य होगा? क्या सोशल डिस्टेंसिंग की वापसी होगी? या यह केवल सीमित स्तर पर संक्रमण का सामान्य उतार चढ़ाव है?

हाल की घटनाओं पर नजर डालें तो आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले में कोविड 19 के आठ सक्रिय मामलों की पुष्टि हुई है और दो संक्रमित मरीजों की मौत हुई है। इसके बाद राज्य सरकार ने निगरानी, सैंपलिंग, जीनोम सीक्वेंसिंग और अस्पतालों की तैयारियों को मजबूत करने के निर्देश दिए हैं। अधिकारियों ने अस्पतालों में आवश्यक दवाओं, जांच किट और सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने को भी कहा है। यह कदम इस बात का संकेत है कि स्वास्थ्य तंत्र किसी भी संभावित स्थिति के लिए पहले से तैयार रहना चाहता है।

उत्तर प्रदेश में वाराणसी के आशापुर क्षेत्र के 27 वर्षीय युवक की कोविड जांच पॉजिटिव आने के बाद उसे बीएचयू अस्पताल में भर्ती कराया गया। युवक को सांस लेने में तकलीफ की शिकायत थी। इसी तरह महाराष्ट्र, विशेषकर मुंबई में भी कुछ नए मामलों की पुष्टि हुई है। इन घटनाओं के बाद संबंधित राज्यों के स्वास्थ्य विभागों ने सतर्कता बढ़ा दी है। हालांकि मामलों की संख्या अभी बहुत अधिक नहीं है, लेकिन अलग अलग राज्यों में संक्रमण का दिखाई देना इस बात की याद दिलाता है कि वायरस पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

इन खबरों के बीच प्रसिद्ध गायक और बिग बॉस 14 के पूर्व प्रतिभागी जान कुमार सानू के कोरोना संक्रमित होने की खबर भी चर्चा का विषय बनी। सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों के संक्रमित होने पर आम लोगों का ध्यान स्वाभाविक रूप से इस ओर जाता है, लेकिन किसी एक या कुछ मामलों को व्यापक महामारी का संकेत मान लेना उचित नहीं होगा। महामारी विज्ञान में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए संक्रमण की दर, अस्पताल में भर्ती होने वालों की संख्या, गंभीर मरीजों का अनुपात और सामुदायिक प्रसार जैसे कई संकेतकों का अध्ययन किया जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि कोविड 19 का वायरस अब पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। यह अन्य श्वसन संक्रमणों की तरह समय समय पर नए स्वरूपों के साथ सामने आ सकता है। अधिकांश देशों में अब कोविड की निगरानी सामान्य सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था का हिस्सा बन चुकी है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर नया मामला नई महामारी की शुरुआत है, बल्कि यह कि स्वास्थ्य तंत्र लगातार स्थिति पर नजर रख रहा है।

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या फिर मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग की वापसी होगी। वर्तमान स्थिति को देखते हुए इसका उत्तर फिलहाल नहीं है। केंद्र स्तर पर ऐसी कोई नई राष्ट्रीय अनिवार्य गाइडलाइन जारी नहीं की गई है, जिसमें सभी नागरिकों के लिए मास्क पहनना या सामाजिक दूरी बनाए रखना अनिवार्य किया गया हो। हालांकि स्वास्थ्य विशेषज्ञ यह सलाह अवश्य दे रहे हैं कि भीड़भाड़ वाले स्थानों, अस्पतालों और बंद कमरों में मास्क पहनना अभी भी एक अच्छा एहतियाती उपाय है। जिन लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है, बुजुर्ग हैं या पहले से किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं, उन्हें अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए।

कोरोना महामारी के दौरान हमने सीखा था कि संक्रमण की रोकथाम केवल सरकारी नियमों से नहीं होती, बल्कि व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। यदि किसी व्यक्ति को बुखार, लगातार खांसी, गले में खराश या सांस लेने में तकलीफ जैसे लक्षण दिखाई दें तो उसे जांच करानी चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। बीमारी की स्थिति में भीड़भाड़ से बचना और दूसरों के संपर्क को सीमित रखना न केवल कोविड बल्कि अन्य संक्रामक रोगों की रोकथाम में भी उपयोगी है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस समय घबराने के बजाय सतर्क रहने की सलाह दे रहे हैं। कोविड 19 के अधिकांश नए मामलों में गंभीर बीमारी नहीं देखी जा रही है, लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि सावधानी पूरी तरह छोड़ दी जाए। महामारी के वर्षों ने यह साबित किया कि शुरुआती लापरवाही संक्रमण को तेजी से फैलने का अवसर देती है। इसलिए समय पर जांच, संक्रमित व्यक्ति का उपचार और आवश्यकतानुसार अलग रहना आज भी प्रभावी रणनीति मानी जाती है।

इस पूरे घटनाक्रम का एक सकारात्मक पक्ष भी है। 2020 की तुलना में आज भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था कहीं अधिक तैयार है। देश के अधिकांश अस्पतालों में कोविड प्रबंधन का अनुभव है। प्रयोगशालाओं की जांच क्षमता पहले से बेहतर है। जीनोम सीक्वेंसिंग की सुविधा भी अधिक व्यापक हो चुकी है, जिससे नए स्वरूपों की पहचान अपेक्षाकृत जल्दी हो सकती है। इसके अलावा बड़ी आबादी को पहले ही टीके लग चुके हैं, जिससे गंभीर बीमारी का जोखिम पहले की तुलना में काफी कम माना जाता है।

महामारी ने लोगों की स्वास्थ्य संबंधी सोच भी बदली है। अब सामान्य सर्दी, खांसी और बुखार को भी लोग पहले की तुलना में अधिक गंभीरता से लेते हैं। हाथों की सफाई, खांसते समय मुंह ढकना और बीमार होने पर घर पर रहना जैसी आदतें केवल कोविड ही नहीं बल्कि इन्फ्लुएंजा और अन्य श्वसन संक्रमणों के प्रसार को भी कम करने में मदद करती हैं।

हालांकि सोशल मीडिया पर फैलने वाली अपुष्ट सूचनाओं से सावधान रहना भी उतना ही जरूरी है। अक्सर कुछ सीमित मामलों को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे अनावश्यक भय का माहौल बन जाता है। दूसरी ओर कुछ लोग हर चेतावनी को नजरअंदाज भी कर देते हैं। दोनों ही स्थितियां उचित नहीं हैं। सही तरीका यही है कि स्वास्थ्य मंत्रालय, राज्य सरकारों और विश्वसनीय चिकित्सा संस्थानों द्वारा जारी आधिकारिक जानकारी पर भरोसा किया जाए।

भारत में अभी जो स्थिति दिखाई दे रही है, वह व्यापक संक्रमण की नहीं बल्कि सीमित मामलों की है। विभिन्न राज्यों में नए मरीज मिलने के बाद निगरानी बढ़ाई गई है और स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड में है। यह सतर्कता इसलिए आवश्यक है ताकि यदि संक्रमण बढ़ने के संकेत मिलें तो समय रहते आवश्यक कदम उठाए जा सकें। यही सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत होती है कि वह संभावित खतरे का पहले से आकलन कर सके।

कोरोना महामारी ने यह भी सिखाया कि स्वास्थ्य सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक का व्यवहार संक्रमण की दिशा तय करता है। यदि लोग लक्षण होने पर जांच कराएं, चिकित्सकीय सलाह का पालन करें और दूसरों की सुरक्षा का ध्यान रखें तो किसी भी संक्रामक रोग के प्रसार को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

फिलहाल उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि भारत में कोरोना वायरस पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है और कुछ राज्यों में इसके नए मामले सामने आ रहे हैं। लेकिन अभी तक ऐसे संकेत नहीं हैं कि देश 2020 या 2021 जैसी व्यापक महामारी की ओर बढ़ रहा है। इसलिए डरने की नहीं, बल्कि जागरूक और सतर्क रहने की आवश्यकता है। मास्क को फिलहाल सार्वभौमिक रूप से अनिवार्य नहीं बनाया गया है, लेकिन जोखिम वाली परिस्थितियों में उसका उपयोग एक समझदारी भरा कदम है। यदि नागरिक सावधानी, वैज्ञानिक सोच और जिम्मेदार व्यवहार अपनाते हैं तो किसी भी संभावित चुनौती का सामना पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

- महेन्द्र तिवारी

नई उड़ान : भारतीय छात्र खोज रहे हैं उभरते वैश्विक शिक्षा केंद्र

लंबे समय तक अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया भारतीय छात्रों के लिए विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के सबसे लोकप्रिय गंतव्य रहे। विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय, उत्कृष्ट शोध सुविधाएँ और बेहतर रोजगार के अवसर इन देशों को विशेष आकर्षण प्रदान करते थे। लेकिन अब वैश्विक शिक्षा का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। भारतीय छात्र पारंपरिक विकल्पों से आगे बढ़कर उन नए देशों की ओर रुख कर रहे हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, किफायती खर्च, आधुनिक शोध सुविधाएँ और बेहतर करियर संभावनाएँ उपलब्ध करा रहे हैं।

इस बदलाव के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। पारंपरिक देशों में लगातार बढ़ती ट्यूशन फीस, रहने का महंगा खर्च, कड़े वीज़ा नियम और प्रवेश के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने छात्रों को नए विकल्पों की तलाश के लिए प्रेरित किया है। दूसरी ओर, कई उभरते देशों ने अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया है, अंग्रेज़ी माध्यम में पाठ्यक्रमों की संख्या बढ़ाई है और अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए आकर्षक नीतियाँ लागू की हैं।

आज जर्मनी, आयरलैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, फिनलैंड, स्वीडन, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), जापान, दक्षिण कोरिया और न्यूज़ीलैंड जैसे देश भारतीय छात्रों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। प्रत्येक देश अपनी विशेषताओं के कारण अलग पहचान रखता है। जर्मनी इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल और अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी है तथा वहाँ कई सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में कम या नगण्य ट्यूशन फीस पर शिक्षा उपलब्ध है। आयरलैंड सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल और वित्तीय क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहा है, जिससे छात्रों के लिए रोजगार की संभावनाएँ बढ़ रही हैं।

फ्रांस और नीदरलैंड ने अंग्रेज़ी माध्यम में अनेक पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए वहाँ अध्ययन करना पहले की तुलना में अधिक आसान हो गया है। फिनलैंड और स्वीडन अपनी नवाचार-आधारित शिक्षा प्रणाली, अनुसंधान संस्कृति और सतत विकास पर आधारित पाठ्यक्रमों के कारण वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुके हैं।

एशिया में सिंगापुर शिक्षा और उद्योग का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। यहाँ की विश्वविद्यालयें विश्व रैंकिंग में अग्रणी हैं और उद्योगों से उनका गहरा जुड़ाव छात्रों को बेहतर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।

जापान और दक्षिण कोरिया भी अपनी तकनीकी प्रगति, रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवाचार के कारण भारतीय छात्रों को आकर्षित कर रहे हैं। इन देशों में अंग्रेज़ी माध्यम के पाठ्यक्रमों और छात्रवृत्तियों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है।

संयुक्त अरब अमीरात भी उच्च शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है। यहाँ विश्व की अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के परिसर स्थापित हैं। भारत के निकट होने के कारण यह देश भारतीय छात्रों के लिए सुविधाजनक और व्यावहारिक विकल्प बनता जा रहा है।

इन नए शिक्षा केंद्रों की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण उनकी अपेक्षाकृत कम लागत भी है। कई देशों में शिक्षा और जीवन-यापन का खर्च पारंपरिक गंतव्यों की तुलना में कम है। साथ ही छात्रवृत्ति, शोध अनुदान, सहायक पद और अंशकालिक रोजगार की सुविधाएँ छात्रों की आर्थिक चुनौतियों को काफी हद तक कम कर देती हैं।

हालाँकि विदेश में पढ़ाई के लिए किसी देश का चयन केवल कम खर्च या लोकप्रियता के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। छात्रों को विश्वविद्यालय की मान्यता, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, शोध सुविधाएँ, उद्योग से जुड़ाव, इंटर्नशिप के अवसर, पढ़ाई के बाद रोजगार की संभावनाएँ, भाषा संबंधी आवश्यकताएँ और जीवन की गुणवत्ता जैसे पहलुओं का गंभीरता से मूल्यांकन करना चाहिए।

डिजिटल तकनीक ने इस प्रक्रिया को पहले से कहीं अधिक सरल बना दिया है। आज छात्र ऑनलाइन माध्यम से विश्वविद्यालयों की तुलना कर सकते हैं, वर्चुअल कैंपस टूर देख सकते हैं, विशेषज्ञों से परामर्श प्राप्त कर सकते हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित करियर मार्गदर्शन प्लेटफॉर्म की सहायता से अपनी रुचि और योग्यता के अनुरूप संस्थानों का चयन कर सकते हैं।

आज वैश्विक शिक्षा केवल कुछ चुनिंदा देशों तक सीमित नहीं रह गई है। विश्व के अनेक देश प्रतिभाशाली अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। इससे छात्रों के सामने पहले से कहीं अधिक विकल्प उपलब्ध हैं और वे अपनी शैक्षणिक रुचियों, आर्थिक स्थिति तथा करियर लक्ष्यों के अनुरूप सर्वोत्तम निर्णय ले सकते हैं।

भारतीय छात्रों के लिए यह एक नए युग की शुरुआत है। अब सफलता केवल अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया तक सीमित नहीं है। दुनिया के अनेक नए शिक्षा केंद्र उत्कृष्ट अवसर प्रदान कर रहे हैं, जहाँ गुणवत्